



What is Arya Samaj?

Arya Samaj is an institution founded by Maharishi Dayanand Saraswati based on the universal teachings of the Vedas. It is an organisation propagating universal message of the Vedas for the benefit of the entire humanity.

ARYAN VOICE

YEAR 38

18/2016-17

MONTHLY

January 2016

Arya Samaj West Midlands would like to wish you a



Very Happy New Year!

We wish 2016 bring joy, peace, good health, prosperity & happiness to you & your family....

**Celebration of Republic Day of Indian
On Sunday 31st January 2015
From 11am to 1.30pm at Bhavan**

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)

188 INKERMAN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS,
BIRMINGHAM B7 4SA

Tel: 0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj	3
Realization of God	by Krishan Chopra 4
१६वाँ और अंतिम सँस्कार-अन्त्येष्टि-कर्म	आचार्य डॉ. उमेश यादव 6
Matrimonial Advert	15
Climate Change – (Global Warming)	By Dr. Narendra Kumar 16
Hall Hire Advert	19
News (पारिवारिक समाचार)	20
Important	24

For General and Matrimonial Enquiries

Please Ring

Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)

Monday: - 1pm-5pm

Tuesday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,

Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.

Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

PLEASE NOTE WINTER HOURS MAY VARY DUE TO WEATHER.

10 Principles of Arya Samaj

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rigved, Yajurved, Samved and Atharva Ved contain all true knowledge,spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

Realization of God

यशोहविर्वधतामिन्द्रजूतं सहस्रवीर्यं सुभृतं सहस्कृतम् । प्रसस्त्रीणमनुदीर्घाय
चक्षसे हविष्मन्तं मा वर्धय ज्येष्ठतातये ॥ अथर्ववेद ६.३९.१

**Yaso havirvardhtamindrajutam sahasraviryam subhrtam sahaskrtam
I prasartranamanu dirghaya caksse havismantam ma vardhaya
jyeshthatataye ll**

Atharva Veda 6.39.1

Meaning in Text Order

Yasah = glory

Havih = oblation

Vardhatam = increase

Indrajutam= inspired by God

Sahasra = thousand

Viryam = vigor

Subhrtam = adequately performed

Sahaskrtam = obtained by conquests

Prasartranam = with stern effort

Anu = after that

Dirghaya = extended

Cha ksse = vision

Havismantam = oblation offered with dedication

Ma= to me

Vardhya = raise

Jyeshthatataye = occupying excellent position.

Meaning

Let us enjoy this world without greed and be glorious. The enjoyment without greed bestows upon us immense strength. It protects us and defeats our enemies. O Lord! May you raise me to attain the longevity of life, the highest rank and extended vision.

Contemplation

After many births, if a person is fortunate enough, and if the blessing of God is with that person then the realisation takes place that emancipation and realisation of God is the aim and purpose of life. Otherwise, a person is lost in the petty enjoyments of life.

I have realised now that my ultimate aim in life is the realization of God. This can give me eternal peace and through that only can I get rid of the cycle of birth and death and the taste of sorrow and pleasure. I would like to concentrate on my aim and that is only possible when I close my external eyes and open my internal eyes. Beyond senses is the mind, beyond the mind is intellect, beyond intellect is the soul and beyond the soul is God. The realisation of God is my aim.

When the five senses are introverted and intellect is not agile, that state is called yoga. When the mind is without any thought, it clears all hurdles and becomes stable like the flame of a lamp. Only then the soul is able to realise God.

To reach that stage, the soul has to offer its oblation, complete surrender and dedication. It all depends, how deep surrender is? The realisation of God depends on our complete surrender. Therefore it is my earnest desire that my surrender, oblation and dedication must be full of vigour and glory. Your realisation in my mind makes me glorious in your divinity. O lord! You are master of the universe; bestow upon me your grace.

by Krishan Chopra

१६वाँ और अंतिम सँस्कार-अन्त्येष्टि-कर्म

आचार्य डॉ. उमेश यादव

महर्षि दयानन्द ने अन्त्येष्टि को एक ऐसा कर्म माना जो शरीरान्त होने पर सँस्कार रूप में किया जाता है। शरीर के लिये यह अन्तिम सँस्कार है। इसे नरमेध, पुरुषमेध, नरयाग, पुरुषयाग आदि शब्दों से भी जाना जाता है। आश्वलायन गृह्यसूत्र, कौशिक सूत्र आदि में अन्त्येष्टि कर्म करने का उल्लेख है। यजुर्वेद ४०/१५ में “भस्मान्तं शरीरम्” कहा गया है। इसका तात्पर्य शरीर को भस्म कर देना ही उसका अन्तिम कर्म है। इस कारण ही वेद के आदेशानुसार मृतक शरीर का दाह कर्म किया जाता है। यह अत्यन्त वैज्ञानिक है। शरीर पूर्णतया जलकर भस्म हो जाता है। लकड़ी, औषधियुक्त सामग्री, घृत, चन्दन, गुगल आदि सुगन्धित पदार्थ मिले सामानों के साथ शरीर का अंतिम सँस्कार किया जाता है जो अच्छी तरह जलकर कम से कम प्रदूषण के साथ भस्म हो जाता है। इसमें जितना अधिक सुगन्धित व औषधिपूर्ण सामग्री, घी, अगर, तगर, गुगल आदि पदार्थों के साथ शरीर को जलायेंगे, उतना ही कम या न के बराबर प्रदूषण होगा जो जन-जीवन के लिये हितकर है। भस्म-क्रिया करने से एक ही स्थान पर बार-बार अनेक शरीरों का सँस्कार होता रहेगा जिससे भूमि-समस्या भी उत्पन्न नहीं होगी। मनुस्मृति २/१६ में इसे “निषेक” कहा गया है - “निषेकाधिश्मशान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधि” अर्थात् मन्त्रपूर्वक निषेकादि कर्म श्मशान भूमि में करने का विधान है। मंत्रोच्चारण से वातावरण में आध्यात्मिक अवस्था उत्पन्न होती है, प्रार्थना की जाती है जिससे निश्चित ही सम्बन्धित परिवार को सामयिक दुःख को झेलने तथा

सत्य को स्वीकारने में बड़ी भारी मदद मिलती है । मनोवैज्ञानिक तरीके से उन्हें आत्मिक बल मिलता है ।

अवैदिक प्रक्रियायें- पौराणिक विधि में कुछ अवैदिक प्रक्रियायें सम्मिलित हैं जिन्हें महर्षि दयानन्द ने सर्वथा नकारा है और इन्हें अवैदिक घोषित किया है । अन्त्येष्टि कर्म के बाद दशगात्र, एकादशाह, द्वादशाह, त्रयोदशाह अर्थात् दशवां (शिरादि-बाल-मुण्डण व परिवार भोज आदि, एगारहवां, बारहवां, तेरहवां आदि दिनों में सामुहिक भोज, सेजिया दान, सपिंडी दान, मासिक/वार्षिक गया आदि तथाकथित तीर्थ-स्थानों में जाकर श्राद्ध करना, गरुड़-पुराण वाचन आदि ये सब वेदों की अज्ञानता और सत्योपदेश के अभाव के कारण ही है । सिद्धान्ततः शरीर-त्याग के बाद जीव यमालय को जाता है फिर द्यौः लोक होता हुआ पुनः नये जीवन में आने हेतु पुरुष वीर्य के माध्यम से नयी माँ के गर्भ को प्राप्त हो जाता है । वैदिक ग्रन्थों में यम शब्द को कोई स्थान के लिये नहीं प्रयुक्त किया गया है अपितु इसका ऋतु, परमेश्वर, अग्नि, वायु, विद्युत्, सूर्य आदि अर्थों में प्रयोग किया गया है । महर्षि दयानन्द-कृत सँस्कारविधि में छः स्थानों पर यम शब्द अन्त्येष्टि के मंत्रों में पढ़ा गया जिसका अर्थ उपरोक्त ऋतु, परमेश्वर, अग्नि आदि ही है । वस्तुतः जीवात्मा अपने सूक्ष्म शरीर के पंच प्राण-प्राण, अपान, व्यान, समान और उदान, पंच ज्ञानेन्द्रियां-चक्षु, नासिका, जीहवा, कर्ण और त्वचा, पंच तन्मात्रायें-रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श ये १५, मन और बुद्धि मिलकर कुल १७ तत्त्वों के साथ अगले जन्म हेतु आवश्यक ऊर्जा को पाने के लिये अन्तरिक्ष लोक से सम्पर्क बनाता हुआ वायु, अग्नि, जल, आकाश, वनस्पति आदि पदार्थों से ऊर्जावान् होकर विद्युत्, सूर्य, चन्द्र से भी सम्पर्क बनाने के लिये द्यौः लोक को जाता है

तथा फिर वह नये जीवन हेतु कर्मानुसार ईश्वरीय न्याय से किसी नये गर्भ को धारण करता है- देखें यजुर्वेद ३९ वाँ अध्याय, महर्षि दयानन्द भाष्य । जीवात्मा की यह पहली अवस्था है । अगर वह नये जीवन में नहीं जाता तो वह अपने अच्छे कर्मों के कारण सीधा मोक्ष को प्राप्त करता है । वस, ये ही दो अवस्था शरीर त्यागने के बाद जीवात्मा की होती है । इसमें गया-श्राद्धादि सब पौराणिक क्रियायें निरर्थक हैं; फिजुल हैं । नये जीवन पाने या मुक्ति को पाने में ये पौराणिक क्रियायें कुछ भी मदद नहीं मिलती उल्टा परिवार के लोग फिजुल धन व समय बर्बाद करते हैं और अज्ञानता के शिकार बनते हैं । हाँ, महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि अगर कोई सम्पन्न/ धन्नाढ्य है तो वह अपने जीते या उसके मरे पीछे सम्बन्धि जन वेद-विद्या, वेदोक्त धर्म-प्रचार, अनाथालय आदि निर्माण व संचालन, वेदोक्त धर्मोपदेश की प्रवृत्ति के लिये चाहे जितना धन प्रदान करे; बहुत अच्छी बात है - द्रष्टव्य-सं.वि. अन्त्येष्टि कर्म-महर्षि दयानन्द ।

विधिगत विचार-

स्नान-विधि- मृतक शरीर का स्नान कार्य पुरुष को पुरुष जन और स्त्री को स्त्रियाँ मिलकर करें । शरीर पर पहले दही मलें फिर शुद्ध पानी से नहावें । सुखे तौलिया से शरीर सुखाकर फिर नये वस्त्र धारण करावें । शरीर पर चन्दनादि का लेप लगाना उचित है । यह सब कार्य घर पर या जहाँ मृतक शरीर रखने की उचित व्यवस्था है, वहीं करें । श्मशान भूमि ले जाने हेतु लकड़ी/लोहे आदि की मंजिका बनावें जो आसानी से चार कंधों पर ढोया जा सके अथवा कोई वाहन की व्यवस्था की जा सकती है । यह सब देश-काल-परिस्थिति पर निर्भर है । इंगलैंड आदि देशों में इसके लिये अलग बक्सा

कॉफिन बनाया जाता है जिसे एक निश्चित कार या घोड़ों की बग्गी में रखकर श्मशान भूमि में ले जाया जाता है ।

प्रयुक्त सामग्री- शरीर के भार के बराबर घृत लेकर, चन्दन, कस्तूरी, केसर, अगर, तगर. कपूर, पलाश /पीपलादि लकड़ी लेवें और कुल मिलाकर दूनी सामग्री का प्रयोग लिखा है । सात मन या नौ मन लकड़ी भारत के क्षेत्रों में लगाते हैं । जहाँ खुले आकाश में श्मशानस्थ वेदी बनती है, वहाँ इतनी सामग्री, घी आदि को लगाना उचित है । उद्देश्य है कि न्यूनत्तम प्रदूषण हो पर जहाँ विद्युत् शव दाह गृह बना है, वहाँ थोड़ी दो-चार किलो सामग्री ही स्वीकार किया जाता है । केवल घी व सामग्री और कुछ सुगन्धित पदार्थों के साथ ही सारी आहुतियाँ पूरी करनी पड़ती है । इस तरह के टेकनालॉजिकल दाह गृह में चन्द मिण्टों में शरीर स्वाभाविकरूप से न्यूनत्तम प्रदूषण के साथ भस्म कर दिया जाता है । अतः वहाँ अधिक सामग्री, घी की जरूरत नहीं पड़ती । लकड़ी तो विल्कुल ही नहीं पड़ती । कुशल आचार्य/पुरोहित अपनी समझ से यथासम्भव सामग्री व घी का प्रयोग कर लेते हैं । जितना अधिक हो जाये उतना ही अच्छा है । दाह की प्रक्रिया विदेशों में थोड़ा भिन्न है । पहले मृतक शरीर को नहा-धो नये वस्त्रादि डालकर फ्युनिरल डायक्टोरेट ऑफिस से घर पर लाया जाता है फिर घर पर ही मंत्रोच्चारण के साथ आहुतियों की विधि विना अग्नि प्रवेश के ही कर दी जाती है । कोई फ्युनिरल डायक्टोरेट कार्यालय में ही यह विधि कर लेते हैं । प्रसंगवस यह बताना उचित होगा कि यहाँ यूरोपियन देशों में अन्त्येष्टि कर्म हेतु जल्दी श्मशान भूमि (क्रेमेटोरियम) में तिथि व समय नहीं मिलता, इस कारण मृतक शरीर को किसी फ्युनिरल डायक्टोरेट कार्यालय में एक ऐसी व्यवस्था/तापक्रम में रखा जाता है । जिस

दिन तारिख व समय मिलता है, उसी दिन अन्त्येष्टि कर्म करना होता है । मंत्रात्मक आहुति-विधि के पश्चात कार या बग्गी में कॉफिन सहित शरीर को रखकर मान-सम्मानपूर्वक श्मशान भूमि ले जाते हैं । वहाँ केवल दिवंगत् आत्मा की शान्त्यर्थ विद्वान् पुरोहित (रेलिजियस मिनिस्टर) प्रार्थना करते हैं, कहीं-कहीं आध्यात्मिक भजन भी सब मिलकर गाते हैं । परिवार या मित्र वर्ग से कुछ लोग श्रद्धांजलि पढ़ते हैं/ मौखिक रूप से भी देते हैं । अन्त में मृतक शरीर को कॉफिन समेत दाह मशीन में डाल दिया जाता है । उसी दिन या दूसरे दिन अपनी सुविधानुसार घर पर आकर सम्मिलित हवन आदि क्रिया की जाती है और फिर वहाँ उपस्थित पारिवारिक लोग मिलकर साधारण भोजन करते हैं । वस, इसके बाद कोई कार्यक्रम नहीं होता । बाद में एक दिन एकत्रित अस्थि और भस्म शेष को किसी गहरे बहते पानी में बहा देते हैं ।

मंत्रात्मक अन्त्येष्टि-विधि- सँस्कार काल में मृतक का पैर दक्षिण तथा शिर उत्तर में रखें । भूमि को गोमय (गाय के गोबर) से लेप करें फिर यथावत् लकड़ियों का चयन कर विधिवत् लिखित मंत्रों के उच्चारण करते हुये स्वाहा के साथ सारी आहुतियाँ सामग्री व घी से करें । इससे पूर्व मृतक का निकटतम पारिवारिक सदस्य (पुत्र/पुत्री/भाई/पिता/पति/पत्नी या गुरु के लिये विश्वसनीय निकटतम शिष्य) जो उसका उत्तराधिकारी/दायभाग बनने वाला है, वही मुखाग्नि करे, वही बाद में पगड़ी धारण कर परिवार को आगे ले चलने की जिम्मेवारी ले । जब तक शरीर भस्म न हो जाये तब तक ध्यान रखें । सामग्री व घी जब शेष रह जाये तो फिर उन्हीं मंत्रों से आहुतियाँ दोहरायें । स्वामी दयानन्द ने प्रथम आश्वलायन गृह्यसूत्र से ४, ऋग्वेद से १७, यजुर्वेद से ६३, अथर्ववेद से १० और अन्त में तैत्तिरीय

आरण्यक से २६ मंत्रों का चयन कर कुल १२१ एक सौ एककीस मंत्रों से आहुतियों का विधान किया है । इनमें छः बार “यम” शब्द आया है जिसका अर्थ पूर्व लिखित ऋतु, परमेश्वर, अग्नि, वायु, विद्युत्, सूर्य आदि ही बताया गया है । इन मंत्रों में विशेषतः यही बताया गया है कि शरीर छोड़कर जीव अपने कर्मानुसार नये जन्म या मोक्ष को धारण करता है जो हम पूर्व विस्तार से इसकी चर्चा कर आये हैं । अतः अपने जीवन में मनुष्य सदैव श्रेष्ठ कर्म ही करे ताकि उसका अगला जन्म उत्तम हो या मोक्ष मिले । पौराणिक विधि के अनुसार शुरु में मृतक शरीर के मुख में तुलसी दल, पंच रत्न, गंगाजल आदि डालना भी अवैदिक ही है । यह सर्वथा निरर्थक है । हाँ, मृतक शरीर के मुख में या बालों में पुष्कल घी डालें तो कपाल आदि को अच्छी तरह भस्म होने में वह सहायक होगा है जो मान्य है ।

अन्त्येष्टि के पश्चात् का कार्य-

स्नान व वस्त्र-प्रक्षालन- श्मशान भूमि से लौटकर घर या अगर व्यवस्था हो तो श्मशानभूमि में ही सब सम्मिलित लोग स्नान करें तथा वस्त्र भी धोवें । मृतक का घर भी मार्जन, लेपन, प्रक्षालन आदि प्रक्रिया से घर को शुद्ध करें फिर सब जनों मिलकर स्तुति, प्रार्थना, उपासना पूर्वक विधिवत् यज्ञ करें । इससे घर का अशुद्ध वायु निकलकर शुद्ध वायु का प्रवेश सम्भव हो जाता है जिससे घर का वातावरण शुद्ध हो जाता है । सबका मन भी हल्का हो तात्कालिक अवस्था को सहने तथा सत्य को स्वीकारने में सबको विशेष कर निजी परिवार को बड़ी भारी मदद मिलती है । उपस्थित विद्वान् /आचार्य/पुरोहित सत्य धर्मोपदेश देवें जो आत्मिक रहस्य,

जीवनमूल्य, मरने के बाद आत्मा की स्थिति आदि का सद् विचार रखें ताकि परिवार के लोग या उपस्थित जन सामान्य अवस्था में आ अपने-अपने दायित्वों को पूरा करने में जुड़ जायें ।

अस्थि-चयन- अन्त्येष्टि के तीसरे दिन अस्थि चयन का विधान है । तीसरे दिन तक लगभग चित्ता शान्त हो जाती है । अस्थि व राख को वहाँ से उठाकर थैले व बोरी में डालकर उस जगह को गोबर आदि से लेपन कर साफ कर दें ताकि अन्यों के लिये वह जगह काम आ सके । अस्थि को वहीं कहीं गाड़ दें अथवा गहरे चलते पानी में डाल दें । राख को भी अपनी सुविधानुसार किसी खेत में फैला दें अथवा अस्थि के साथ ही गहरे चलते पानी में बहा दें । ऐसा करना स्वच्छता को बरकरार रखने में सहायक होगा ।

भूत व प्रेतात्मा का डर- पौराणिक परम्परा में भूत व प्रेतात्मा का डर दिखाया जाता है । गरुड़ पुराण में भी ऐसी चर्चा का उल्लेख मिलता है जो अवैदिक और निरर्थक है । भूत का अर्थ बीता हुआ समय या पदार्थ होता है । प्रेत का अर्थ मृतक शरीर होता है और आत्मा जो पूर्व ही शरीर से निकलकर ईश्वरीय न्याय व्यवस्था से नये शरीर में आ जाता है । वैदिक मान्यता में यह आत्मा कुल १२ क्षणों में ही अपने सूक्ष्म शरीर के साथ नये जीवन में आ जाता है या अपने कारण शरीर के साथ मोक्ष को प्राप्त हो जाता है । भूत समय बीत गया, पदार्थ या मृतक शरीर भस्म हो गया और आत्मा नये जीवन या मोक्ष में चला गया फिर डर किसका है ? इस सत्य ज्ञान को मन में बसावें तथा सर्वथा डररहित हो जायें । आत्मा कभी भटकती नहीं है, यह विचार सर्वथा निरर्थक है । इसे पूर्णतया मन से निकाल दें ।

शान्ति/ श्रद्धांजलि/प्रार्थना सभा/ पगड़ी रसम- सामाजिक व्यवस्था को संतुलित करने हेतु अस्थि चयन के बाद उसी दिन या सुविधानुसार किसी एक दिन शान्ति/ श्रद्धांजलि सभा रख ली जाती है जिसमें हवन आदि कर दिवंगत् आत्मा के प्रति उसके गुण, गौरव, विशेषता आदि का बखान कर उसे श्रद्धांजलि देने की प्रथा है । परिवार को सहानुभूति दी जाती है और दिवंगत् आत्मा की शान्त्यर्थ या उसके अच्छे भावी जीवन हेतु प्रार्थना की जाती है । यहीं पर किसी-किसी क्षेत्र खासकर भारत के पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, दिल्ली आदि क्षेत्रों में उत्तराधिकारी/दायभागी को पगड़ी दिलवायी जाती है जो एक सामाजिक पद्धति है । अन्त में उपस्थित पारिवारिक मित्र वन्धु मिलकर साधारण भोजन करते हैं और सभा विसर्जित हो जाती है । यह सामाजिक दृष्टिकोण से ही किये जाने की परम्परा है वरणा महर्षि दयानन्द ने अस्थि चयन के बाद आत्मा के लिये अन्य कोई करणीय कर्म नहीं बताया । व्यवस्थित सभा में सत्य वैदिक धर्मोपदेश का होना उचित होगा जिससे सम्बन्धित परिवार -मित्र आदि उपस्थित जन को भावी व्यावहारिक जीवन बीताने में उचित मार्ग-दर्शन मिल सके ।

अग्नि-दाह सबके लिये अनिवार्य- परम्परा है कि बहुत छोटे वच्चों के मृतक शरीर को श्मशान भूमि में कहीं गाड़ दिया जाये पर ऐसा कोई शास्त्रीय प्रमाण नहीं है । महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट कहा है कि दाह कर्म ही सबके लिये उचित है चाहे ब्रह्मचारी हो या गृहस्थी, वानप्रस्थी हो या सँन्यासी । स्त्री हो या पुरुष, वच्चा हो या वृद्ध, सबके लिये दाह कर्म ही उचित होगा क्योंकि दाह कर्म ही वातावरण को अधिक स्वच्छ रख सकता है तथा भूमि समस्या से भी हमें वंचित कर सकता है ।

कहीं-कहीं सँन्यासी को गाड़ने की परम्परा चल पड़ी है । यह भी अवैदिक है । ऐसा भ्रम मनुस्मृति ६/२३ वर्णित श्लोक से हुआ है । वहाँ एक शब्द “ अनग्नि” सँन्यासी के लिये प्रयोग किया गया जिसका उचित अर्थ है कि सँन्यासी आहवनीय अग्नि से वंचित होता है । आहवनीय अग्नि ब्रह्मचारी, गृहस्थी और वानप्रस्थी के कर्त्तव्य द्योतक है जो भौतिक यज्ञादि कर्त्तव्यों को व्याख्यात करता है । सँन्यासी केवल ज्ञान-यज्ञ के लिये ही जिम्मेवार होता है, इसी कारण इसे यहाँ “ अनग्नि” कहा गया है । इससे अन्त्येष्टि में अग्नि दाह वर्जित नहीं सिद्ध होता अत एव अग्नि दाह सबके लिये अनिवार्य है जो वैदिक और वैज्ञानिक है ।

अग्निदाह ही सर्वोत्तम- जलाना, गाड़ना, जलप्रवाह, और जंगल में फेंक देना, ये चार विधियाँ व्यवहार में उपलब्ध होती हैं । इनमें जलाना ही सर्वश्रेष्ठ, वैदिक व वैज्ञानिक है , बाकी सब अवैदिक और समाज के लिये हानिकारक तथा अवैज्ञानिक है । विस्तार ज्ञान के लिये महर्षि दयानन्द लिखित सँस्कारविधि एवं सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धित प्रकरण द्रष्टव्य है । थोड़ा विचार करें- गाड़ने से भूमि-समस्या, जलप्रवाह से जल-प्रदूषण तथा जंगल में फेंकने से वायु-प्रदूषण जैसी समस्या अवश्य ही उत्पन्न होगी पर औषधिपूर्ण सामग्री व घी के साथ जलाने से शरीर भस्म होकर शरीर का एक-एक तत्त्व(पंच तत्त्व- वायु, जल, पृथिवि, आकाश, अग्नि) सब वातावरण में मिल जायेगा और सुगन्धित पदार्थों के समिश्रण से प्रदूषण भी न के बराबर होगा । अतः जलाना/अग्नि-दाह ही इन सब में सर्वोत्तम प्रक्रिया है । लोकहित में इस व्यवहार को हमें अवश्य ही अपनाना चाहिये ।

VEDIC VIVAH (MATRIMONIAL) SERVICE

The vedic vivah (matrimonial) service has been running for over 30 years at Arya Samaj (West Midland) with professional members from all over the UK.

Join today.....

Application form and information can be found on the website
www.arya-samaj.org

Or

Call us on
0121 359 7727

Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm
Bank Holidays - Closed

CLIMATE CHANGE - (GLOBAL WARMING)

According to Met Office UK the rise in global surface temperature has averaged more than 0.15 degree Celsius per decade since the mid-1970s. Central England temperatures have increased by 1 degree Celsius since the 1970s. The 10 warmest years on record have occurred since 1997. Sea levels around the UK have risen 10cm (4 inches) since 1900. If emissions continue to grow at present rates global temperature could rise as much as 7 degree celsius by 2100.

The consequences will be catastrophic. There will be very severe flooding, winters will get significantly wetter, 20 to 30% of species could face extinction, drought, lack of fresh drinking water, lack of food, heat waves, wildfires etc. will occur more frequently.

Fossil fuels, including coal, oil and natural gas, are currently the world's primary source of energy. Fossil fuels do irreparable damage to our environment. Petroleum (oil) is responsible for 42% of greenhouse gas emission in the US. Coal is primarily used to generate electricity and is responsible for 39% of the electric power supply in US in 2014. So Coal is responsible for 31% of greenhouse gas emission in the US. Natural gas is responsible for 27% of greenhouse emission in US.

The five worst polluters of the world are:

1. China emits about 6,018 million tons of greenhouse gases per year.
2. United States of America is a close second with 5903 tons of greenhouse gases per year.
3. European Union is about 2,000 million tons.
4. Russia releases about 1704 tons per year
5. India releases about 1203 tons of greenhouse gases per year.

Basically we can not go on living in future as we are at present.

Under the auspices of United Nations, Conference of Parties (COP) 1 took place in Rio as Earth Summit in 1992 where it adopted UN framework on climate change. Since then this kind of Conference of Parties carried on in different cities of the world. The 2015 United Nations Climate Change conference, COP 21 was held in Le Bourget, near Paris, France from November 30 to December 12. 195 countries agreed to take steps to limit the world temperature increase to 1.5 degree Celsius in 21st Century.

The well wishers of planet earth have been very active through out the world to force governments to take remedial actions to control global warming. Interfaith meeting on Climate Change was held in Birmingham on 28th November 2015. Well over 100 people of all religions and backgrounds attended this meeting. The idea was to bring people of all religions in Birmingham to protest and lobby the British and world governments to improve the climate policies that will affect all of us here and in the world. One of trustees of Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands Mr. Sanjive Mahandru took a very active part in this meeting and March in city of Birmingham. He also spent 3 days in Paris where the 2015 Climate Change Conference took place.

Several alternative resources are available that can supply clean renewable energy to replace harmful fossil fuels. These are water, wind, solar energy, biomass and geothermal.

We can reduce our energy requirement by improving the energy efficiency of buildings, vehicles, industries, appliances and equipments in our day to day use, not to use too much unnecessary electricity and gas in our homes. We should switch off our TV sets, computers and microwaves last thing before we go to bed. We should also use low energy bulbs in our homes.

We should try to minimise the use of our private cars as much as possible and practical. Use of public transport, walk or bike should be encouraged.

Vedas teach us to live in harmony with our environment, to protect our forests and vegetations, to do Havan in order to purify our surrounding air, to be vegetarian so that there will be no need to do cattle or poultry farming. Methane gas discharged by animals is one of the natural gases responsible for global warming. We recite the following Shanti- Path towards the end of Havan and any other religious ritual.

**Om dyauh shantirantariksam shanti prithivi shantirapah
shantirosadhayah shanti.
Vanaspatayah shantirvishwedevah shantibrahma shanti
sarvam shantih shantireva shantih sa ma shantiredhi.
Yajurved 36/17**

Meaning

May the sky be peaceful and peace giving, may the mid space be peaceful, may the earth be peaceful, may the waters be peaceful, may the annual plants be peaceful, may the forest be peaceful, may all the bounties of nature be peaceful, may knowledge be peaceful, may all things be peaceful, may there be peace and peace only, may such peace come to me.

O God, may peace prevail every where.

By Dr. Narendra Kumar

Arya Samaj (West Midlands) Hall Hire

Perfect venue for –

- **Engagements**
- **Religious Ceremonies**
- **Community events**
- **Family parties**
- **Meetings**

Venue information –

- **£300 for 6 hours (min.)**
 - **£50 Hourly**
- **Main Hall with Stage**
 - **Dining hall**
 - **Kitchen**
 - **Cleaning**
- **Small meeting room**
- **Vegetarian ONLY**
 - **NO Alcohol**
 - **Free parking**

**For more information call us on
0121 359 7727**

**Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm Bank Holidays – Closed**

News

Condolence:

- **Mr. Prem Kharbanda (Walsall) for loss of his elder son Mr. Sanjoy Kharbanda (53). May God bless the departed soul for eternal peace and give strength to entire family, his father Mr. Prem Kharbanda, wife Leena, daughters Dr. Preyanka, Shefali, son Sachin, brother Mr. Ajoy Kharbanda, bhabhee Aditi, nieces Mahima, Neha and nephew Tusar to bear the time of sorrow.**
- **Mr. Amit Jobanputra (Solihull) for loss of his father Mr. Satyavrat Jobanputra (87). May God grant the departed soul eternal peace and the strength to the whole family, his beloved wife Maturyben, son Amit ji, daughter in law Manorama, daughter Archana & her family, grandchildren Vineet and Amita to bear the time of sorrow.**

Congratulations:

- **Mr. Amar Chakravarti and family for moving to a new house. Grih-Pravesh Havan in Sutton Coldfield, Birmingham.**
- **Mr. Amit Khanna and family, Sutton Coldfield, Birmingham for having performance of Mundan Sanskar of their daughter Arsia.**
- **Mr. Harish Malhotra and family for celebrating his 73rd birthday and Miss Charu Malhotra moving to a new house in Surrey.**

**Arya Samaj West Midlands would like to thank all
Yajmans and sponsors for Sunday vedic Sermon and
Rishi Langar.**

- **Dr. Chetan Verma and family for memorial havan for his Late father's respect on 15.11.2015.**
- **Mr. Ravinder Renukanta and family for havan to celebrate their son birthday on 22.11.2015.**
- **Mr. Krishan Chopra and Mrs. Dr. Raksha Chopra & family for havan for healthy and happy life on 29.11.2015.**
- **Dr. Amit Rastogi and family and Mrs. Anita Rastogi and family for Havan for the sweet memory of their beloved mother Dr. Renu Rastogi on her 1st Death anniversary on 06.12.2015.**
- **Miss Charu Malhotra for havan for her fathers Mr. Harish Malhota 73rd birthday and also for buying a new house in Surrey.**

Donations to Arya Samaj West Midlands

- | | |
|---|-------------|
| • Dr. Chetan Verma | £261 |
| • Mr. Ravinder Renukanta - £80+£50 = | £130 |
| • Mr. Prem Nanda | £20 |
| • Mr. Om Joshi | £11 |

- **Mr. Amit Panwar** **£51**
- **Mr. M.P.Bhalla** **£21**
- **Mr. J.G. Bector** **£11**
- **Mr. Krishan Chopra** **£450**
- **Mrs K. Mishra** **£30**
- **Mrs. P. Mangal** **£21**
- **Mrs. Anita Rastogi** **£260**
- **Mr. S.K. Oberai** **£51**
- **Mrs. Rishpal Kaur Tehara** **£20**
- **Miss Charu Malhotra** **£201**

Donations to Arya Samaj through Priest Services.

- **Mr. Amar Chakravarti for
Grih Pravesh Havan** **£101**
- **Mr. Prem Kharbanda for
Shanti Yajna & Pagari Rasam** **£400**
- **Mr. Amit Jobanputra for Shanti havan** **£51**
- **Mr. Amit Khanna for
Mundan Skr of daughter** **£51**

Thank you for all your Donations

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on
0121 359 7727
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 3rd January 2016 & 7th February 2016**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

Website: www.arya-samaj.org

IMPORTANT

Notices to Arya Samaj West Midlands Members

- **Dear Ordinary members of ASWM. This is a polite request to pay your annual fee of £20 membership when you receive a reminder letter from Arya Samaj Office. This money helps us to send you Aryan Voice each month. The letter will come out to members on the month they joined. From January 2016 we will have to sadly cancel the membership of those who have not paid the fee.**
- **Dear members, we are updating our email database for the membership of Arya Samaj West Midlands. We do not have email addresses of a large number of our members. In this time and age it is important to have this information. So if you have an email address please inform our office by emailing your address to enquiries@arya-samaj.org. Your cooperation will be highly appreciated.**